Lecture No. 07/12

Name of the College - A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
Name - Bharti Kumari (G.T)
Deptt. - A.I.H.&.C
Lession/plan For class - B.A, A.I.H.&.C (H) - I, paper - II
Date - 24-04-2021
Name of the topic - The Age of Gupt - Histories of Rama Gupt.

रामगुप्त :-

समुद्रगुप्त के बाद कौन गुप्त - साम्राज्य का उत्तराधिकारी हुआ, यह अभी तक विवादास्पद है। गुप्त लेखों के अनुसार समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का शासन था, रामगुप्त का कोई लेख नहीं मिला है। और न कोई प्रमाणिक सिक्का ही। स्व॰ कृष्णदत्त वाजपेयी जी ने कुछ ताम्र - सिक्के प्रकाशित किए हैं। जिनके आधार पर पुनः कुछ विद्वानों की दिलचस्पी इसमें बढ़ गई है, रामगुप्त की ऐतिहासिकता अब भी संदिग्ध है। उसके सम्बंध में जो साहित्यिक प्रमाण मिलते हैं, वे छठी शताब्दी के पूर्व के नहीं हैं।

साहित्यिक प्रमाणों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त गद्दी पर बैठा। वह कमजोर शासक था। शक शासक ने रामगुप्त पर आक्रमण किया। संधि के फलस्वरूप रामगुप्त ने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को शकों को समर्पित करने का वचन दिया। इस संधि के बाद रामगुप्त के छोटे भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय

P.T.O.

ने ध्रुवदेवी का वेश बनाकर शको के समीप जाने का निश्चय किया। ऐसा करने में वह सफल हुआ तथा उसने शकपति को मार डाला। इसके पश्चात रामगुप्त मार डाला गया। रामगुप्त की मृत्यु के बाद ध्रुवदेवी ने चन्द्रगुप्त से विवाह कर लिया।

विशाखदत्त - प्रणीत देवीचंद्रगुप्तम् नाटक में रामगुप्त का उल्लेख है। देवीचन्द्रगुप्तम् उपलब्ध नहीं है। परन्तु इसके उद्धरण नाट्यदर्पण, में मिलते हैं। बाण ने अपनी हर्षचरित में भी इस घटना का उल्लेख किया है। हर्षचरित की अपनी टीका शंकराचार्य ने भी इस बात का समर्थन किया है। राजशेखर ने काव्य - मिमांसा में भी इस घटना का उल्लेख किया है। भोज के शृंगारप्रकाश से भी उपर्युक्त बातों पर प्रकाश पड़ता है। परन्तु उनमें देवीचन्द्रगुप्तम् से ही उद्धृत वाक्य मिलते हैं।

राष्ट्रकूट - अमोघवर्ष प्रथम के सञ्जन - ताम्रपत्र - अभिलेख में इस बात का वर्णन किया है कि किसी गुप्त नरेश ने अपने भाई का राजसिंहासन ले लिया था - तथा उसकी स्त्री छीन ली थी। इसके आधार पर कुछ लोग उपर्युक्त घटना का समर्थन करते हैं। बारहवीं शताब्दी के मुजमलुत्तवारीख में इसी प्रकार की एक कथा संग्रहीत है। इन सभी साधनों से रामगुप्त सम्बन्धी घटनाओं का ज्ञान होता है। इसके आधार पर कहा जा सकता है,

P.T.O.

कि रामगुप्त अत्यंत शक्तिहीन और असमर्थ था। रामगुप्त और शकों की बीच की युद्ध का वर्णन विभिन्न ग्रन्थों में मिलता है, परन्तु गुप्त लेखों से इसकी प्रामाणिकता सिद्ध नहीं हो पाती है। साहित्यिक ग्रन्थों में सर्वत्र उस स्थान का वर्णन नहीं मिलता। जहाँ रामगुप्त तथा शकों में युद्ध हुआ था। केवल राजशेखर ने पर्वतीय प्रदेश में कार्तिकेयनगर के समीप इस युद्ध के होने की संभावना प्रकट की है। जो लोग रामगुप्त को शासक मानना चाहते हैं, उनका कहना है कि "काच" का सिक्का रामगुप्त का ही सिक्का है।

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं यानि कि वर्णन कर चुके हैं कि समकालीन अभिलेखों में रामगुप्त नामक किसी राजा का उल्लेख नहीं था और यह सम्पूर्ण कहानी बाद की उपज मालूम पड़ती है, बाणों ने रामगुप्त और ध्रुवदेवी का उल्लेख किया है। यदि हम इस बात को मान भी लें कि किसी रामगुप्त का शकों के साथ युद्ध हुआ था, तो वह रामगुप्त भिलसा क्षेत्र का कोई स्थानीय शासक रहा होगा। न कि गुप्तवंशीय समुद्रगुप्त का वास्तविक उत्तराधिकारी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि जिन शक राजाओं को स्वयं समुद्रगुप्त ने गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत किया था। वे इतने कैसे उठ खड़े हुए और उनके पुत्र को पराजित किया ? यदि किया ही तो किस स्थान पर? P.T.O.

को द्वारा माड चन्द्रगुप्त द्वितीय P.T.O.

Scanned with CamScanner

इतनी घटनाओं का उल्लेख गुप्त शासकों में क्यों नहीं? शकों को पराजित करने का वास्तविक श्रेय चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य को है, जिसका विवरण हम नीचे प्रस्तुत करेंगे। ध्रुवस्वामिनी से चन्द्रगुप्त द्वितीय का विवाह शास्त्र-विरुद्ध हो सकता है, इसे हम मान भी सकते हैं, परन्तु मेरा अनुमान है कि राज्यारोहण के पश्चात् पूर्व ही रामगुप्त की मृत्यु हो गई होगी, और समुद्रगुप्त के मरनेपर चन्द्रगुप्त द्वितीय ही गद्दी का अधिकारी हुआ होगा। जब तक कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता, तब तक रामगुप्त की ऐतिहासिकता संदिग्ध ही रहेगी। परमेश्वरीलाल गुप्त ने रामगुप्त को गुप्त साम्राज्य का शासक माना। ~~[illegible]~~ कई जगहों पर यानि कि विदिशा में पत्थर की तीन जैन मूर्तियाँ मिली हैं जिन पर महाराजाधिराज रामगुप्त का उल्लेख है। इन अभिलेखों और अन्यान्य साधनों के आधार पर रामगुप्त को गुप्त-सम्राट स्वीकार किया गया है। और समुद्रगुप्त के बाद उसके राज्यारोहण की बात कही गई है।

मालती कुमारी
24-04-2021